जीडीपी से नहीं बन जाता कोई देश सुपर पॉवर : रॉबिन रैना

रॉबिन रैना

सूचना का अधिकार रिश्वतखोरी का विकल्प तो होता ही है, लेकिन इस कानून के इस्तेमाल के लिए एक महत्वपूर्ण बात है साहस। साहस सवाल पूछने का। अगर हमारे पास साहस है, तो हमारे बहुत सारे काम बिना किसी रिश्वत के ऐसे ही होने लगते हैं। ऐसे ही एक साहसी शख्स हैं रॉबिन रैना। रॉबिन एनआरआई बिजनेसमैन हैं और अपनी जड़ों की ओर लौटने की कोशिश कर रहे हैं। भारत में गरीबों के लिए मुफ्त घर बनाने और शिक्षा देने के लिए उनकी संस्था रॉबिन रैना फांउडेशन काम कर रही है। सूचना के अधिकार कानून के इस्तेमाल और इससे जुड़े अन्य मसलों पर 'अपना पन्ना' ने रॉबिन रैना से बातचीत की:-

अपना पन्ना: रॉबिन सबसे पहले आप भारत में अपने रिश्वतखोरी के अनुभव के बारे में बताएं।

रॉबिन रैना: भारत में जब हमने अपना बिजनेस शुरू किया तो पहले हम उत्तर प्रदेश सरकार के बिजली विभाग में बिजली का कनेक्शन लेने गए। अधिकारियों ने कहा कि इसके लिए आपको रिश्वत देनी होगी। मेरे स्टॉफ ने उन अधिकारियों को रिश्वत दे दी। मुझे पता चला तो मैंने फोन कर अधिकारियों से पैसा वापस करने को कहा और कहा कि पैसा वापस नहीं देंगे तो हम इंटेलीजेंस को फोन करने जा रहे हैं। उन्होंने पैसा तो भेज दिया मगर फाइलें फाड़कर फेंक दीं। दो साल तक हमारी बिल्डिंग में बिजली नहीं थी। इसके लिए हमने तीन जेनरेटर रखे क्योंकि मैंने सोचा कि हमें भारत में अच्छा काम करना है और मैं करप्शन मिटाने के काम से ही यह शुरूआत करूंगा। दो साल बाद वही लोग हमारे पास आए और बोले कि एक तो आप रिश्वत नहीं दे रहे हो और ऊपर से आपका बॉस मीडिया में इस बात को उठा रहे हैं। आपको बिजली चाहिए हम दे देंगे। आज उनकी दया से हमारे पास बिजली है।

"अगर हमें सुपर पॉवर होना है तो पहले कदम के तौर पर सूचना कानून को मजबूत करना चाहिए"

अपना पन्ना: आप दुनिया के पचास से ज्यादा देशों में बिजनेस करते हैं। कई देशों में आरटीआई जैसे कानून हैं। आपको किसी देश में इस कानून का इस्तेमाल करने की जरूरत पड़ी?

रॉबिन रैना: मुझे व्यक्तिगत तौर पर तो इसकी जरूरत नहीं पड़ी है मगर बहुत से ऐसे लोगों को जानता हूं जो लगातार इसका इस्तेमाल करते हैं। जो जानते हैं कि हमारे राइट्स क्या हैं। आजकल भारत में बड़ी-बड़ी बातें होती है कि हम सुपर पॉवर बनेंगे। लेकिन इसके लिए समाज में समानता लानी पड़ेगी। और सुपर पॉवर सिर्फ जीडीपी से नहीं बना जाता है। सुपर पॉवर बना जाता है आम आदमी को अधिकार देने से। अगर हमें सुपर पॉवर होना है तो पहले कदम के तौर पर सूचना कानून को मजबूत करना चाहिए।

अपना पन्ना: रॉबिन इस दिशा में आप अपना क्या योगदान देखते हैं। एक भारतीय और एक एनआरआई होने के नाते...

रॉबिन रैना: वैसे तो मैं एक अमेरिकन नागरिक हूं मगर दिल से हिन्दुस्तानी हूं। काफी गर्व है अपने देश पर लेकिन मैंने देखा है कि दिल्ली सरकार झुग्गी झोंपड़ी को दिल्ली से बाहर कर रही है क्योंकि कॉमनवेल्थ गेम्स होने हैं। ये ठीक नहीं है क्योंकि ये तो वही बात हो गई कि हमारे घर पर कोई आए और हम मिट्टी कारपेट के नीचे डालते रहें क्योंकि हम खूबसूरती दिखाना चाहते हैं। लेकिन इससे तो कारपेट ही खराब होगा। यही काम हमारी दिल्ली सरकार कर रही है। मुझे लगता है कि झुग्गी झोंपड़ी को स्वीकार करने में कोई शर्म नहीं है।

अपना पन्ना: भारत में आप किस तरह के काम कर रहे हैं?

रॉबिन रैना: पैंतीस सौ बच्चों को हम एजुकेट कर रहे हैं। उन्हें अच्छी स्वास्थ्य सेवा, कपड़े उपलब्ध कराते हैं। 15-16 वोकेशनल ट्रैनिंग इंस्टीट्यूट हैं। एक प्रोजेक्ट है जिसमें हम 6 हजार घर बना रहे हैं क्योंकि स्लम के बच्चों को शिक्षित करना है तो उनके लिए एक पक्का घर बना दें ताकि वो उस जगह से अलग ना जा सकें।

अपना पन्ना: रॉबिन आपके विचार बहुत खूबसूरत हैं, आपने हमसे बातचीत की, बहुत-बहुत धन्यवाद। ■